नसमरसलग (6-4-7) [नसमरसला गः षड्वेदैर्हयैर्हरिणी मता Chm. 2. 167] हरिणी, वृषभचरित, वृषभललित.

भरनभनलग (10-7) [दिग्यति वंशपत्रपतितं भरनभनलगैः Jk. 2. 213] वंशदल, वंशपत्रपतित, वंशपत्र, ललित.

मभनततगग (4-6-7) [मन्दाक्रान्ता गतिश्रुतुयतिर्माद्भनौ तौ च गौ चेत् Jk. 2. 210] मन्दाक्रान्ता, श्रीधरा.

मभनमयलग (4-6-7) [वेदर्तुश्वैर्मभनमयला गश्चेत्तदा हारिणी Chm. 2. 170] हारिणी.

मभनरसलग (4-6-7) [भाराक्रान्ता मभनरसला गुरुः श्रुतिषड्हयैः Chm. 2. 171] भाराक्रान्ता.

यतनसभलग [कलातन्त्रं यस्तनसभलघुभिर्गेन सहितम् P. 7. 17. 8] कलातन्त्र.

यभनरसलग (4-6-7) [भवेत् कान्ता युगरसहयैर्यभौ नरसा लगौ P. 7. 17. 5] कान्ता, भाराक्रान्ता.

यमनसभलग (6-11) [रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला गः शिखरिणी Chm. 2. 163] शिखरिणी.

ससजभजगग (10-7) [ससजा भजगा गु दिक्स्वरैर्भवति चित्रलेखा P. 7. 17. 1] अतिशायिनी, चित्रलेखा.

18 धृति (37)

नजभजरर (11-7) [नजभजरैस्तु रेफसहितैः शिवैर्हयैर्नन्दनम् Chm. 2. 177] नन्दन.

ननमतभर (7-4-7) [नौ म्तौ भ्रौ ललितम् H. 2. 308] ललित.

ननममयय (7-4-7) [नौ मौ यौ चन्द्रमाला H. 2. 307] चन्द्रमाला.

ननरभरर (10-8) [भवति नयुगलं रभौ रौ दशाभिर्गिरीन्द्रैर्लता Vr. 3-94. 1] लता.

ननरभरस (10-8) [भवति नयुगलं रभौ सौं दशभिर्गजेन्द्रलता Chm. 2. 190] गजेन्द्रलता.

ननरररर (10-8) [इह ननरचतुष्कसृष्टं तु नाराचमाचक्षते (दशवसुभिर्यतिः) Chm. 2. 178] नाराच, महामालिका, लाल्सी, निशा, वरदा, ललसा, सिंहविक्रीडित.

ननरररर (13-5) [त्र्यधिकदशयतिर्ननौ रौ भवेतां ररौ तारका Vr. 3. 94. 4] तारका, निशा, प्रिया.

ननससतय (4-9-5) [गतिनिधियतिरिति नौ यदि सौ त्यौ पङ्कजमुक्ता Jk. 2. 253] पङ्कजमुक्ता, पङ्कजवक्त्रा.

नसमतभर (6-4-8) [न्सौ म्तौ भ्रौ हरिणीपदं चयैः (षट्चतुर्भिः) यतिः H. 2. 318] हरिणीपद.

नसममयय (6-5-7) [न्सौ मौ यावनङ्गलेखा चबैः (षट्पञ्चभिः) यतिः H. 2. 312] अनङ्गलेखा.

भभभभनय (6-4-8) [भीन्या भङ्गिः (भी=चतुर्भकाराः) H. 2. 319] भङ्गि, विच्छित्ति.

भभभभभस [पञ्चभकारकृताश्वगतिर्यदि चान्तसरचिता Vr. 3. 94. 5] अश्वगति.

भभभभभस (11-7) [धूर्जटिविश्रमणं मणिमाला भाद्भौ भभसयुतौ Jk. 2. 222] मणिमाला.

भरननस (9-9) [भादूरनना नसौ भ्रमरपदकमिदमभिहितम् Vr. 3. 94. 6] भ्रमरपदक.

भसनजनर (6-5-7) [हीरकमुदितं भसनजनैरिह रगणोऽन्ततः Chm. 2. 195] हीरक.

मतनजभर (5-7-6) [म्तन्जभ्राः कुरङ्गिका ञछैः (पंचसप्तभिः) H. 2. 311] कुरङ्गिका.

मतनयय (5-6-7) [कुसुमितलतावेल्लिता म्तौ न्यौ याविन्द्रियर्तुस्वराः P. 7. 21] कुसुमितलतावेल्लिता, चन्द्रलेखा, चित्रलेखा.

मतनयय (4-7-7) [मत्ना यिः घछैः (चतुर्भिःसप्तभिः) चित्रलेखा H. 2. 303] चित्रलेखा.

मननततम (4-7-7) [वर्णाश्वैर्मननततमकैः कीर्तिता चित्रलेखेयम् Chm. 2. 184] चित्रलेखा.

मभनजभर (4-7-7) म्भौ न्जौ भ्रौ चेचलमिदमुदितं युगैर्मुनिभिः स्वरैः Chm. 2. 188] चल.

मभनयय (4-7-7). [वेदाङ्गान्तैर्मभनययुगैः स्यादियं चन्द्रलेखा Chm. 2. 194] चन्द्रलेखा.

मभनयरर (4-7-7) [अर्थाश्वाश्वैर्मभनयरयुगैर्वृत्तं मतं केसरम् Chm. 2. 187] केसर, केशर.

ममभमयय (5-6-7) [तद् भूतर्त्वश्वैर्मौ भ्मौ विरतिश्चेत्सिंहविस्फूर्जितं यौ Chm. 2. 191] सिंहविस्फूर्जित.

ममभमसम (9-9) [ममभा मसमा मञ्जीरा Pp. 2. 180] मञ्जीरा.

मरभनतस (7-11) [म्रौ भ्नौ त्सौ स्वररुद्रैर्यतिरिति महासेनमुदितम् P. 7. 21. 17] महासेन.

मरभयरर (11-7) [धृत्यां म्रभ्या रौ काञ्ची टैः (एकादशभिः) यतिः H. 2. 300] काञ्ची, वाचालकाञ्ची.

मसजजभर (8-5-5) [मात्सौ जौ भरसंयुतौ करिबाणखैर्हरिणप्लुता Chm. 2. 181] हरिणप्लुता, हरनर्तक.

मसजसतस (12-6) [मः सो जः सतसा दिनेशऋतुभिः शार्दूलललितम् Chm. 2. 180] शार्दूलललित.

मसजसरम (12-6) [शार्दूलं वद मासषट्कयति मः सौ जसौ रो मश्चेत् Chm. 2. 186] शार्दूल.

मससरररर (3-6-8-1) [विलासो मः ससौ राश्च गुणषड्वसुभिर्यतिः Mm. 19. 5] विलास.

यमनसतस (6-6-6) [सुधा तर्केस्तर्कैर्भवति ऋतुभिर्यो मो नसतसाः Chm. 2. 183] क्रीडा, मुक्तामाला, सुधा.

यमययय [इदं क्रीडाचक्रं यमाभ्यां समस्तैर्यकारैः समेतम् Chm. 2. 193] क्रीडाचक्र.

रसजजभर (8-5-5) [सौं जजौ भरसंयुतौ करिबाणखैर्हरनर्तनम् Chm. 2. 192] उज्ज्वल, चर्चरी, मालिकोत्तरमालिका, विबुधप्रिया, हरनर्तन.

रसजयभर (6-5-7) [सौं जयौ भरसंयुताहृतुबाणाश्वैर्वरकृत्तनम् Vr. 3. 94. 15] वरकृत्तन.